नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

आतंकवाद पर प्रधानमंत्री की खरी-खरी

ब्राजील के रियो डी जनेरियो में संपन्न हुआ 17वां ब्रिक्स शिखर सम्मेलन, अपने पारंपरिक आर्थिक सहयोग के एजेंडे से हटकर, कुछ अधिक मूलभूत और सामयिक मुद्दों पर केंद्रित रहा. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की उपस्थिति और उनके दो टूक बयानों ने सम्मेलन को एक नई दिशा दी, खासकर आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक एकजुटता और मौजूदा वैश्विक संस्थानों में सुधार की आवश्यकता पर. यह शिखर सम्मेलन इस बात का प्रमाण है कि ब्रिक्स अब केवल एक आर्थिक मंच नहीं, बल्कि वैश्विक चुनौतियों पर अपनी सशक्त आवाज उठाने वाला एक महत्वपूर्ण भू-राजनीतिक समूह बन रहा है. पहलगाम में हुए हालिया आतंकी हमले की पृष्ठभूमि में, प्रधानमंत्री मोदी का आतंकवाद पर सीधा और स्पष्ट रुख बेहद महत्वपूर्ण था. उन्होंने आतंकवाद को 'मानवता पर हमला' बताते हुए न केवल इसकी कड़ी निंदा की, बल्कि यह भी स्पष्ट किया कि आतंकवाद के पीड़ितों और उसके समर्थकों को एक ही तराजू पर नहीं तोला जा सकता. यह बयान उन देशों को सीधा संदेश था जो आतंकवाद को 'रणनीतिक हथियार' के रूप में इस्तेमाल करते हैं या आतंकवादियों को पनाह देते हैं, अक्सर उन्हें राज्य-प्रायोजित आतंकवाद के आरोप से बचाते हुए.

ब्रिक्स घोषणापत्र में पहलगाम हमले का उल्लेख और आतंकवाद से निपटने में 'दोहरे मापदंडों' को खारिज करने का आह्वान भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत है. यह वैश्विक मंच पर भारत की उस पुरानी मांग को बल देता है कि आतंकवाद के खिलाफ एक एकीकृत और अविभाजित दृष्टिकोण होना चाहिए, जिसमें किसी भी प्रकार की अस्पष्टता या चुनिंदा कार्रवाई की गुंजाइश न हो. लंबे समय से भारत विभिन्न अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जोर देता रहा है कि आतंकवाद को अच्छे या बुरे आतंकवाद के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता. ब्रिक्स की यह सहमति वैश्विक समुदाय में आतंकवाद के खिलाफ शून्य सहिष्णुता की नीति को मजबूत करती है. आतंकवाद के अलावा, प्रधानमंत्री मोदी ने वैश्विक संस्थानों में सुधार की तत्काल आवश्यकता पर भी जोर दिया. उनका यह कहना कि 20 वीं सदी में बने संस्थान 21वीं सदी की चुनौतियों से निपटने में अक्षम हैं, बिल्कुल सटीक है. आज की दुनिया 1940 के दशक की दुनिया से बहुत अलग है, जब संयुक्त राष्ट्र और ब्रेटन वुड्स संस्थानों की स्थापना हुई थी. तब की शक्तियों और आज की उभरती शक्तियों के बीच संतुलन में भारी बदलाव आया है?

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद , विश्व व्यापार संगठन और बहुपक्षीय विकास बैंकों में सुधार की मांग लंबे समय से उठ रही है. ये संस्थान अब दुनिया की बदलती भू-राजनीतिक और आर्थिक वास्तविकताओं को प्रतिबिंबित नहीं करते . विकासशील देशों, विशेषकर 'ग्लोबल साउथ' को इन संस्थानों में पर्याप्त प्रतिनिधित्व नहीं मिला है, जिसके कारण अक्सर उनके हितों की अनदेखी होती है. उदाहरण के लिए, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी सदस्यों की संख्या आज भी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद की स्थिति को दर्शाती है, जबकि भारत और ब्राजील जैसे बड़े विकासशील देश इसमें स्थायी सीट के लिए संघर्ष कर रहे हैं.

प्रधानमंत्री का यह स्पष्ट संदेश था कि दुनिया को एक नई, बहुध्रुवीय और समावेशी विश्व व्यवस्था की जरूरत है, जिसकी शुरुआत इन वैश्विक संस्थाओं में व्यापक सुधारों से होनी चाहिए. इन संस्थानों को अधिक लोकतांत्रिक, जवाबदेह और प्रतिनिधि बनाने से ही वे आज की जटिल वैश्विक समस्याओं, जैसे जलवायु परिवर्तन, महामारी और आर्थिक अस्थिरता का प्रभावी ढंग से समाधान कर पाएंगे. ब्रिक्स सम्मेलन ने एक बार फिर दिखाया है कि यह मंच केवल आर्थिक मुद्दों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शांति, सुरक्षा और न्याय जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर भी अपनी आवाज उठा रहा है. आतंकवाद के खिलाफ ब्रिक्स देशों की एकजुटता और वैश्विक शासन में सुधार की उनकी सामूहिक मांग भविष्य में एक अधिक संतुलित और न्यायपूर्ण विश्व व्यवस्था की नींव रख सकती है. यह महत्वपूर्ण है कि ब्रिक्स सदस्य देश, जो दुनिया की लगभग आधी आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं, इन चुनौतियों पर एक समान दृष्टिकोण अपना रहे हैं.

ट्रम्प के सामने बेबस यूरोप

डॉ. ब्रह्मदीप अलूने

> ट्रम्प के दबाव में यूरोपीय देश रक्षा खर्च में ज्यादा योगदान देने लगे तो इससे आर्थिक असमानताएं बढ़ सकती है. इसका असर शिक्षा,स्वास्थ्य,रोजगार और पर्यावरण संरक्षण पर भी पड़ेगा. यूरोपीय देशों में लोकतांत्रिक प्रक्रिया के बाधित होने या अस्थिरता का फायदा रूस को मिल सकता है. यूक्रेन युद्द जितना लम्बा खींचता जाएगा,उतने ही यूरोपीय देशों में आपसी मतभेद बढ़ सकते है. इन आशंकाओं से ग्रस्त यूरोप ट्रम्प से यूक्रेन समस्या का जल्द समाधान चाहता है. यूरोप इस तथ्य को नजरअंदाज नहीं कर सकता की रूस की सैन्य क्षमता को दबाव में रखने के लिए अमेरिका का साथ आवश्यक है. ट्रम्प यूरोप पर दबाव बढ़ा रहे है,यूक्रेन को दिए जाने वाले हथियार रोककर पुतिन को फायदा पहुंचा रहे है तथा चीन से व्यापार बढ़ा रहे है. ट्रम्प की कूटनीति अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्य को अस्थिर बना रही है,यूरोप समेत लोकतांत्रिक देशों पर दबाव बढ़ा रही है,वहीं सैन्य,साम्यवादी और राज सत्ताओं को मजबूत होने के अवसर दे रही है.

नियम आधारित व्यवस्था पर यूरोप का भरोसा है लेकिन ट्रम्प का नहीं. मानवाधिकार और लोकतंत्र की रक्षा के लिए यूरोप सजग है लेकिन ट्रम्प नहीं. पुतिन के आक्रमक साम्यवाद से यूरोप चिंतित है लेकिन ट्रम्प नहीं. सामरिक मदद देकर यूक्रेन को मजबूत रखने के लिए यूरोप प्रयत्नशील है लेकिन ट्रम्प नहीं. नियन्त्रण और संतुलन की नीति पर चलकर विश्व शांति बनाएं रखने के लिए यूरोप संकल्पित है लेकिन ट्रम्प बिल्कुल नहीं. अमरीका ने साम्यवाद का अवरोध करने के लिए सैनिक सन्धियों एवं मैत्रियों का निर्माण किया था,इस नीति का पालन अमेरिका के सभी राष्ट्रपतियों ने किया. ट्रम्प ने सामरिक और रणनीतिक बाध्यताओं को दरकिनार कर आर्थिक प्रतिबद्धताओं पर ध्यान केंद्रित कर लिया है.

अमेरिका अपने रणनीतिक प्रतिद्वंद्वी रूस और चीन के लिए हरसंभव प्रयास करने को तैयार दिख रहा है,जबकि वह अपने सबसे करीबी सहयोगी यूरोप के साथ बुरा व्यवहार कर रहा है. यूरोप ईरान को अच्छे ऊर्जा स्त्रोत के रूप में देखता है,उसे ईरान से परमाणु समझौता करने में दिलचस्पी भी है,पर ट्रम्प इसे लेकर मुखर रहे है. राजनीति,आर्थिक और वैश्विक हितों को लेकर ट्रम्प और यूरोप में गहरे मतभेद है. इन सबके बाद भी यूरोप अमेरिका से दूर होने का साहस नहीं कर पा रहा है. यूरोप की इस बेबसी और लाचारी को ट्रम्प बखूबी जानते है इसलिए अब वे यूरोप से अपनी मांगे मनवाने में कामयाब भी हो रहे है.

ट्रम्प ने ज़ोर दिया था कि यूरोपीय देशों को अपनी रक्षा की प्राथमिक जिम्मेदारी लेनी चाहिए इसलिए नाटो के बजट में यूरोप अपना योगदान बढ़ाएं. ट्रम्प ने यूरोप की सुरक्षा की ज़िम्मेदारी अमरीका पर होने पर सवाल उठाएं तो इस दबाव के आगे यूरोप को झूकना पड़ा. हाल ही में द हेग में संपन्न दो दिवसीय नाटो शिखर सम्मेलन के बाद एक संयुक्त घोषणा पत्र जारी किया गया,जिसमें सालाना रक्षा बजट को जीडीपी के पांच फीसद तक ले जाने की प्रतिबद्धता जताई गई. इस योजना की 2029 में पुन: समीक्षा की जाएगी,जिसमें उस समय की रणनीतिक परिस्थितियों और क्षमता लक्ष्यों को ध्यान में रखा जाएगा. नाटो के तीन प्रमुख साझा वित्त पोषित बजट हैं,नागरिक बजट,सैन्य बजट तथा नाटो सुरक्षा निवेश कार्यक्रम.

अब सभी देश महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की रक्षा, नेटवर्क की रक्षा,नागरिक तैयारी और लचीलापन सुनिश्चित करने,नवाचार करने और रक्षा औद्योगिक आधार को मजबूत करने के लिए सालाना जीडीपी का डेढ़ फीसद तक खर्च करेंगे. जबकि साढ़े तीन फीसद से कोर रक्षा आवश्यकताओं की पूर्ति और नाटो की क्षमता तथा लक्ष्यों को पूरा किया जा सकेगा. नाटो के रक्षा खर्च में अमेरिका की सबसे बड़ी भागीदारी है,वहीं फ्रांस, जर्मनी,इटली और यूनाइटेड किंगडम मिलकर यूरोप की भागीदारी निभाते है. जबकि स्लोवेनिया, अल्बानिया, बुल्गारिया, एस्टोनिया, क्रोएशिया, फिनलैंड, आइसलैंड, हंगरी, लिथुआनिया, मोंटेंग्रो, लक्समबर्ग, स्लोवाकिया और स्लोवेनिया जैसे देश शून्य या बहुत कम भागीदारी करते रहे है. ऐसे में यह देश भारी भरकम रक्षा खर्च में कैसे भागीदारी कर पाएंगे,यह देखना होगा.

यूरोप के लिए रूस एक बुरे सपने की तरह है. रूस रणनीतिक रूप से यूरोप पर हावी है वहीं उसकी राजनैतिक महत्वाकांक्षाएं और साम्यवादी आक्रामकता यूरोप की लोकतांत्रिक परम्पराओं के खिलाफ रही है. रूस की भौगोलिक स्थिति इसे एक अद्वितीय रणनीतिक महत्व प्रदान करती है. यह देश ग्यारह समय क्षेत्रों में फैला हुआ है और सोलह संप्रभु देशों के साथ सीमा साझा करता है. रूस के पास आर्कटिक महासागर, प्रशांत महासागर और अटलांटिक महासागर में लंबी तटरेखाएं हैं,साथ ही काला सागर और कैस्पियन सागर तक भी पहुंच है. रूस, दुनिया का सबसे बड़ा देश है,जो पूर्वी यूरोप और उत्तरी एशिया में फैला हुआ है.

मालवा- निमाड़ की डायरी

कलेक्टर के कारण सुधीर गुप्ता-सुभाष सोजतिया में ठनी

संजय व्यास

सामाजिक सद्भावना और समरसता के दौर में आज भी सामंती प्रवृति से कई नेताओं का छुटकारा नहीं हो रहा. नौकरशाह के साथ मिलकर काम करना उन्हें गवारा नहीं. आज परिस्थितियां बदली हैं. रौब किन्हीं जगह ठीक है, पर हर वक्त ठसक में रहना अनुचित है.

हाल के ऐसे ही मामले में मंदसौर सांसद सुधीर गुप्ता तथा पूर्व मंत्री सुभाष सोजतिया में ठन गई. दरअसल नीमच में विद्यार्थियों के लैपटॉप वितरण कार्यक्रम में सांसद सुधीर गुप्ता और नीमच कलेक्टर हिमांशु चंद्र ने मंच साझा किया था. मंच से पहले भी साथ बैठे और एक-दूसरे से बातचीत करते रहे. इस आयोजन में कलेक्टर और सांसद की मौजूदगी पर पूर्व मंत्री सुभाष सोजतिया ने अपने फेसबुक अकाउंट पर एक पोस्ट डाली और उसमें पुराने ऐसे आयोजनों का जिक्र करते हुए कलेक्टर के साथ मंच साझा करने पर गुफ्तगू करने पर निशाना साधा. सोजतिया ने तात्कालीन मंत्री भंवरलाल नाहटा और सज्जन सिंह वर्मा के किस्से लिखे जो उनके कार्यक्रमों में मंच पर कलेक्टरों की उपस्थिति से भडक़ गए थे. सोजतिया ने उक्त घटनाओं का उल्लेख करते हुए सांसद सुधीर गुप्ता के कलेक्टर के साथ मंच साझा करने को गरिमा के खिलाफ बताया व खिंचाई की.

सुधीर गुप्ता | सुभाष सोजतिया

सुधीर गुप्ता का पलटवार

सोजतिया की पोस्ट के जवाब में सांसद सुधीर गुप्ता ने पलटवार किया कि सोजतिया जी आप पांच बार विधायक और मंत्री रहे हैं. आपके मन में भरी दुर्भावनाएं, भेदभाव, आचरण में ऊंच-नीच की भावना के कारण आप अच्छे अवसर खोज नहीं पाए. आप लोग भारत की प्रजातांत्रिक प्रणाली में विश्वास नहीं रखते. जहां तक प्रश्न आईएएस अधिकारी को पास बिठाने का है या पास बैठने का है या गुफ्तगू करने तो इसके लिए भारतीय लोकतांत्रिक ढांचे में बड़ा ही सुंदर वर्णन है. विधायिका, न्यायपालिका व कार्यपालिका के बीच संबंधों की बहुत बार व्याख्या की गई है. सबके साथ से ही आगे बढ़ा जा सकता है, संकुचित मानसिकता में आप जैसे लोगों को समरसता कहां पचेगी.

कुछ दशकों में कावड़ यात्रियों का उत्साह बढ़ा

अंचल में कावड़ यात्रा का क्रेज साल दर साल बढ़ता जा रहा है. करीब तीन दशकों में इसमें काफी बढ़ोतरी देखी गई है. मालवा क्षेत्र में शामिल नर्मदा नदी देवास जिले की सीमा रेखा के रूप में 40 किलोमीटर का सफर तय करती है इसके तहत 15 से अधिक छोटे बड़े घाट आते हैं, जिसमें नेमावर धारा जी और बागदी संगम घाट महत्व पूर्ण है. आगामी 11 तारीख से सावन माह आरंभ हो रहा है श्रावण माह में हिंदू रीति रिवाज में धार्मिक सद्भावना के चलते कई लोग कावड़ यात्री बनकर नर्मदा का जल लेकर समीप के बड़े शिवालय में जाकर जल चढाक़र पुण्य लाभ कमाते हैं. इसी परंपरा में धारा जी से महाकालेश्वर उज्जैन तक निकलने वाली यात्रा विगत 25 वर्षों से जारी होकर सबसे बड़ी यात्रा है. इस यात्रा में 1500 से अधिक कावड़ यात्री शामिल होते हैं. इसके साथ ही छोटी-छोटी यात्राएं पूरे अंचल में श्रावण माह के दौरान निकलती हैं. यात्रा के दौरान धर्म संदेश देती हुई यह यात्रा कई छोटे बड़े गांव से गुजरती है और इसका जगह-जगह स्वागत होता है. इन यात्राओं में अनुशासन सर्वोपरि रहता है ओर यह लोग नियम का पालन करते हुए ट्रैफिक को जाम नहीं करते हैं. दूसरी ओर निमाड़ क्षेत्र में शामिल ओंकारेश्वर महेश्वर मंडलेश्वर जैसे धार्मिक नर्मदा तटों पर भी संबंधित क्षेत्र के कावड़ यात्री कावड़ लाकर जल चढ़ाने का कार्य करते हैं. मध्य प्रदेश में विगत 20 वर्षों से भारतीय जनता पार्टी की सरकार होने की वजह से इन कावड़ यात्रियों का हर संभव ध्यान शासकीय तौर पर भी रखा जा रहा है.

अमेरिका से रकम भेजना कितना महंगा

अमेरिका में कार्यरत भारतीयों द्वारा भारत में अपने परिजनों को रकम भेजना महंगा हो जाएगा. इस धन प्रेषण पर 1 प्रतिशत टैक्स लगेगा. यह नियम 1 जनवरी 2026 से लागू होगा. पहले अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने अपने वन बिग ब्यूटिफुल एक्ट में 5 प्रतिशत प्रेषण कर लगाने की बात कही थी फिर इसे घटाकर 3.5 प्रतिशत पर लाया गया और अंतत: इसे 1 प्रतिशत कर दिया गया. यह बिल हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव्स (प्रतिनिधि सदन) में मुश्किल से पारित हुआ. सीनेट ने इसमें कुछ संशोधन किए. इसके अनुसार नकद रकम, मनी आर्डर या कैशियर्स चेक से भेजी गई रकम पर यह रेमिटेंस टैक्स लागू होगा. यदि रकम भेजनेवाला अपनी अमेरिका नागरिकता प्रमाणित करता है तो यह टैक्स नहीं लगेगा. इसी तरह बैंक अकाउंट के माध्यम से या अमेरिका में जारी डेबिट और क्रेडिट कार्ड से रकम भेजने पर यह टैक्स नहीं लगाया जाएगा. शुरू में प्रस्तावित 5 प्रतिशत की तुलना में यह 1 प्रतिशत का टैक्स काफी कम है. भारतीय रिजर्व बैंक के सर्वे के मुताबिक भारत को अमेरिका से 2023-24 में 32 अरब डॉलर की रकम भेजी गई थी. भारत में सिर्फ अमेरिका से ही धन नहीं आता. खाड़ी देशों तथा अन्य यूरोपीय देशों में कार्यरत या व्यवसाय करनेवाले लोग भी भारत में अपने घर रकम भेजा करते हैं. भारत को विदेश से मिलनेवाली कुल रकम (टोटल रेमिटेंस) का 27.7 प्रतिशत अमेरिका से आता है. 2016-17 में भारत में विदेश से आई रकम में अमेरिका का हिस्सा 22.9 प्रतिशत था जो अब बढ़ चुका है. यदि अमेरिका से 1,000 डॉलर भारत में भेजे जाएं तो लगभग 85,000 रुपए के बराबर होते हैं जिसमें कुछ कमीशन की राशि कट सकती है. विदेश में कार्यरत भारतीय अपनी आय का कुछ हिस्सा भारत में रहनेवाले अपने अभिभावकों का अन्य परिवारजनों को नियमित रूप से भेजते हैं. केरल में हर दूसरे-तीसरे घर से कोई न कोई व्यक्ति खाड़ी देशों में कार्यरत है. वह वहां दीनार या दिरहम कमाता है और अपने परिवार को धन भेजता है. अमेरिका से 15 डॉलर तक की मामूली रकम भेजने पर कोई टैक्स नहीं लगेगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

देवता ही नहीं, सरकार भी सो जाती है चातुर्मास में गहरी नींद आती है

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, आपको जानकारी होनी चाहिए कि आषाढ़ी या देवशयनी एकादशी से भगवान 4 माह के लिए सो गए. शास्त्रों के अनुसार जब देवता सो जाएं तो कोई मंगल कार्य नहीं किया जाता. इसका मतलब यह है कि शादी-ब्याह रुक जाएंगे. पंडित साफ मना कर देंगे कि अभी विवाह नहीं हो सकता. हमें समझ में नहीं आता कि ब्रह्मांड के नियंता ईश्वर कैसे सो सकते हैं?

हमने कहा, बात समझने की कोशिश कीजिए. यह भगवान विष्णु की योगनिद्रा है. इस समय वे आंख मूंदकर ध्यानमग्न रहते हैं. घर में सर्प होने का अंदेशा होने पर लोगों की आंखों से नींद उड़ जाती है लेकिन भगवान शेषनाग की शय्या पर निश्चिंत सोए रहते हैं और लक्ष्मीजी उनके चरण दबाती हैं. शेषनाग भगवान विष्णु के साथ पृथ्वी पर अवतार लेते हैं. कभी वे छोटे भाई लक्ष्मण के रूप में अवतरित होते हैं तो कभी बड़े भाई बलराम के रूप में.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, जहां तक सोए रहने की बात है. विपक्ष मानता है कि सरकार सोई हुई है. गहरी नींद

में गाफिल सरकार को महंगाई, भारी बेरोजगारी, हजारों किसानों की आत्महत्या नजर नहीं आती. सरकारी नौकरी कर रही और कार में घूमनेवाली महिलाओं को भी लाड़की बहीण योजना की रकम दी जा रही है क्योंकि सरकार की आंखें मुंदी हुई हैं. राशन का अनाज भी काले बाजार में जा रहा है. प्रतिष्ठा सूचक महामार्ग पर गहरे गड्ढे पड़ चुके हैं. जनता सरकार से कह सकती है- जागो सोनेवालो, सुनो मेरी कहानी.

हमने कहा, सत्ताधारियों का एक अलग सुविधाभोगी वर्ग रहता है. हमारे 86 प्रतिशत सांसद और बड़ी तादाद में मंत्री व विधायक करोड़पति हैं. महंगाई उनके पास फटक नहीं सकती इसलिए वे आम जनता की व्यथा क्या जानें!

पड़ोसी ने कहा, राजनीति लोगों को अंधा बनाती है. विदेशी भाषा अंग्रेजी की बजाय राष्ट्रभाषा हिंदी का विरोध कर नेतृत्व चमकाया जा रहा है. एक नेता आक्रामक शैली में भाषण देकर मजमा जुटा लेता है लेकिन उसकी पार्टी एक भी सीट नहीं जीत पाती. दूसरा नेता संगठन में कुशल है लेकिन भाषणबाजी में प्रभावशाली नहीं है. हिंदी की ताकत देखिए. हिंदी विरोध के मुद्दे ने बिछड़े हुए भाइयों को मिला दिया. उनका सम्मिलित उद्देश्य है मुंबई मनपा का चुनाव जीतना जिसका बजट देश के अनेक राज्यों से भी ज्यादा है. नेता जनसमस्याओं को देखकर कुंभकर्ण की नींद सो जाते हैं लेकिन जब चुनाव सामने आता है तो जग जाते हैं.

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11956
- डॉ. सागर खादीवाला

1	2		■	3	■	4	5
6		■	■	7	8	■	
■	9		■	10		11	■
12		■	13		■	14	
	■	15		■	16		■
17				■	■	18	19
	■			■	20		
21						■	

बाएं से दाएं
1. चूहा, चोर (सं.)
4. सफेद, उजला, चांदी
6. केशलता, बालों का गुच्छा जो नीचे की ओर लटके
7. पत्थर तोड़ने का भारी औजार
9. घर का भीतरी भाग, आमाशय
10. घुड़की 12. प्रतिज्ञा
13. बिल्कुल ताजा और नया
14. छोटे कद का घोड़ा
15. प्रतिबंध, शर्त 16. जादू, टोटका
17. तालाब 18. संदेह, शंका (उर्दू)
20. एक पद्य जिसमें पहले हा फिर ना
21. ताली

ऊपर से नीचे
1. कंद, जड़, उत्पत्तिस्थान (सं.)
2. छ: कोण वाला
3. धरती, पृथ्वी
5. रीति, शैली, धुन (उर्दू)
8. सांप के आकार की एक मछली
11. कीड़ों को नष्ट करने वाली औषधि
12. प्रशासन संबंधी
13. पेड़ का खोखला भाग
15. झुका हुआ

Solution 11955

1 अ	न	2 मा	द	3 क	■	4 छ	5 मं
भ्र	■	ल	■	6 वि	7 क	लां	ग
8 क	9 मी	■	10 द	■	11 स	ग	र
■	12 त	ट	बं	13 ध	■	■	म
14 म	■	■	15 ग	म	■	16 स्व	च्छ
17 स	लि	18 ला	■	क्री	■	तं	■
न	■	19 वा	20 दी	■	21 पा	त्र	ता
22 द	गा	■	23 प	वि	त्र	ता	■

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में आर्थिक सहयोग मिलेगा, शिक्षा कार्य में अचानक यात्रा हो सकती है, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यो में मन खिन्न रहेगा, व्यापार में व्यय और भागदौड़ एवं वृद्धि होगी, मित्र के कारण तनाव हो सकता है, वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी, घरेलू कार्यो में व्यस्तता रहेगी, व्यय में नियंत्रण रखकर कार्य करें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियोंको कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी, कर्मचारियों का सहयोग रहेगा, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को वरिष्ठ अधिकारियों का सहयोग रहेगा, सिंह राशि के व्यक्तियों को सामाजिक कार्य में ख्याति प्राप्त होगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियोंको प्रोत्साहन प्राप्त होगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मान सम्मान में वृद्धि होगी, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को निज नई योजनाओं पर विचार विमर्श होगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला लंबे कद का फुर्तीला स्वाभाव का, बुद्धिमान चतुर व्यवहार कुशल होगा. स्वास्थ्य नरम गरम रहेगा. ज्वर अतिसार, निमोनिया, आदि से 5 वर्ष की आयु तक कुछ तकलीफ होगी.बाद में स्वस्थ्य रहेगा. यात्राप्रिय एवं मनोरंजन का शौकीन होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

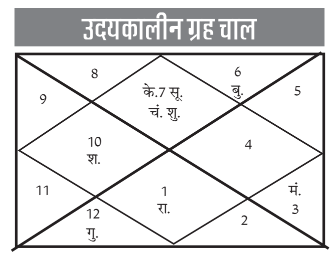

पंचांग

रा.मि. 17 संवत् 2082 आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी भौमवासरे रात 11/56, ज्येष्ठा नक्षत्रे रात 3/31, शुक्ल योगे रात 11/17, कौलव करणे सू.उ. 5/15 सू.अ. 6/45, चन्द्रचार वृश्चिक रात 3/31 से धनु, पर्व- भौम प्रदोष व्रत, शु.रा. 8, 10,11,2,3,6 अ.रा. 9,12,1,4,5,7 शुभांक- 0,3,7.

मेष- कार्यक्षेत्र में चल रही उलझनें दूर होंगी. दिल की बातें अपनों से कह दें, तनाव कम होगा. कार्यो में विवेक के साथ काम लेना हितकर रहेगा. परिश्रम अधिक रहेगा.

वृषभ- भावुकता में लिये गये फैसले बदलना पड़ेंगे. आत्म विश्वास बनाये रखें, मुश्किलें कम होंगी. श्रमसाध्य कार्यो में प्रयास करने पर सफलता मिलेगी.

मिथुन- नई जिम्मेदारियां आने से कार्यक्षेत्र में व्यस्तता रहेगीं. मान सम्मान कीर्ति मिलेगी. बुजुर्ग व्यक्तियों के साथ स्वास्थ्यका ध्यान रखें.

कर्क- मन ही मन किसी बात को लेकर परेशान रहेंगे. जोखिम के कार्य में समय बर्बाद होगा. सामाजिक कार्य बनेंगे. पूज्य व्यक्ति की सलाह हितकर रहेगी.

सिंह- धार्मिक कार्यो में शामिल होने से खुशी मिलेगी. मित्र मिलेंगे. शिक्षा के क्षेत्र में सफलता मिलेगी. आर्थिक समस्या का हल होगा. किये गये प्रयास सार्थक होंगे.

कन्या- सहकर्मी आपके सीधेपन का लाभ उठाने का प्रयास करेंगे. पराक्रम में वृद्धि होगी. नये कार्यो के प्रति विशेष रूचि रहेगी. प्रयासों में सफलता प्राप्त होगी.

तुला- काननी मामले में लापरवाही से नुकसान होगा. साझेदारी लाभकारी रहेगी. अनावश्यक कार्यो पर खर्च होगा. कामकाज में बाधायें आयेंगी.

वृश्चिक- व्यापारिक सौदे लाभकारी रहेंगे. मामूली बात पर दोस्तों से विवाद की संभावना है. आर्थिक संसाधनों में वृद्धि होगी. मानसिक सहयोग शांति मिलेगी.

धनु- विरोधियों केकारण काम करने में परेशानी होगी, जीवनसाथी का साथ खुशी देगा. राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी. सामाजिक कार्यो में सहयोग मिलेगा.

मकर- महत्वपूर्ण मामले में फैसला लेने से बचेंगे. अनहोनी का भय रावणे बढ़ने से रोकेगा. स्वास्थ्य में सुधार होगा. नवीन योजनाओं का विकास होगा.

कुम्भ- मेहमानों के कारण अपना कार्यक्रम बदलना पड़ेगा. धार्मिक आयोजन सुखद रहेंगे. अनावश्यक विवादों को टालना चाहिये.

मीन- भाग्योदय के अवसर मिलेंगे. निजी कार्यो को पूरा करने में सफलता मिलेगी. शारीरिक सुख शांति तथा पारिवारिक दृष्टि से समय अनुकूल रहेगा.

व्यापार भविष्य

आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी को आषाढ़ शुक्ल त्रयोदशी नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, शक्कर सरसों, सोयाबीन, पायोलिन आदि में तेजी होगी. चना, अनाज, पर नरमी रहेगी. भाग्यांक 2697 है.

SUDOKU 7088

5					9	6		
						1	4	
			2	8				
			8				5	2
6								7
1	4				3			
				4	1			
	2	5						
		3	7					4

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सु-दोकू 7087

3	6	5	1	8	2	7	4	9
7	9	2	3	5	4	1	8	6
4	1	8	6	7	9	5	3	2
6	5	9	2	4	8	3	7	1
8	4	7	9	3	1	6	2	5
1	2	3	5	6	7	4	9	8
2	7	6	4	9	5	8	1	3
5	8	1	7	2	3	9	6	4
9	3	4	8	1	6	2	5	7